प्रयाग-अर्द्ध कुम्भ (१९८२) के अवसर पर प्रकाशित

काशी सुमेरुपीठ और मठाम्नायोपनिषत्
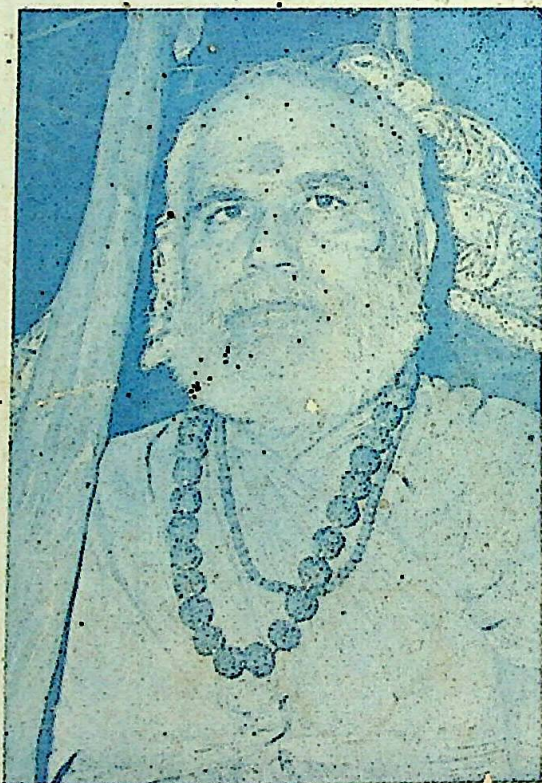
अनन्तश्रीविभूषित ऊर्ध्वाम्नाय

श्रीकाशी - सुमेरु - पीठाधीश्वर जगद्गुरु शङ्कराचार्य

स्वामी श्रीशङ्करानन्दसरस्वतीजी महाराज

संरक्षक : अखिल भारतीय दण्डी संन्यासी संस्थान, वाराणसी

अनन्तश्रीविभूषित धर्मसम्राट् यतिचक्रचूडामणि स्वामी
श्रीकरपात्रीजी महाराज द्वारा
अनन्तश्रीविभूषित जगद्गुरु शङ्कराचार्य
स्वामी श्रीशङ्करानन्दसरस्वतीजी महाराज
को अभिषेक करते समय

ऊर्ध्वाम्नाय काशी सुमेरुपीठ : परिचय

धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष इन चार पुरुषार्थों में काम और मोक्ष साध्य हैं, इन दोनों के धर्म तथा अर्थ साधन हैं। इन दोनों में भी सकाम धर्म और अर्थ काम के साधन हैं और निष्काम धर्म और न्यायगत धर्म परम्परया मोक्ष के साधन हैं। मोक्ष का साक्षात् साधन ज्ञान है, 'तमेव विदित्वाऽतिमृत्युमेति नान्यः पन्था विद्यतेऽयनाय' यह श्रुति इसमें प्रमाण है। अद्वितीयात्मविज्ञान ही मुक्ति का साधन है। इसमें प्रमाण महावाक्य हैं, 'तत्त्वमसि, अयमात्मा ब्रह्म, प्रज्ञानं ब्रह्म, अहं ब्रह्माऽस्मि' इति। 'तत्र को मोहः कः शोक एकत्वमनुपश्यतः, ब्रह्मवेद ब्रह्मैव भवति' इत्यादि श्रुतियाँ भी प्रमाण हैं। इस अद्वैत सम्प्रदाय की प्रवृत्ति समय-समय पर हुई, जिसकी वंशपरम्परा उपनिषदों में भिन्न-भिन्न रूप से वर्णित है। किन्तु आद्य शङ्कराचार्य जिस अद्वैतसम्प्रदाय की वंशपरम्परा में हुए वह वंशपरम्परा इस प्रकार है। नारायण-ब्रह्म-वसिष्ठ-शक्ति-पराशर-व्यास-शुक-गौड़पाद-गोविन्दपाद श्रीशङ्करभगवत्पाद इति। जैसा कि इस सम्प्रदाय में प्रतिदिन इस परम्परा का पाठ चलता है।

श्रीशङ्कराचार्य ने अद्वैत सम्प्रदाय की रक्षा के लिए ब्रह्मसूत्र, उपनिषद्, गीता, विष्णु सहस्रनाम, आपस्तम्ब, धर्मसूत्र, सनत्सुजातीय, महाभारत, गौडपादीय कारिका इत्यादि बहुत ग्रन्थों पर भाष्य लिखा और सरस्वती, तीर्थ, गिरि, पुरी, भारती आदि दशनामधारी शिष्यों के द्वारा इस सम्प्रदाय को प्रसारित तथा प्रवर्धित किया। उन दिनों में बौद्ध मत बहुत प्रबल होता जा रहा था, जो इस औपनिषद अद्वैतसम्प्रदाय का विरोधी था, उसका खण्डन किया, और प्रवृत्ति-मार्ग में स्मार्त्त सम्प्रदाय की प्रतिष्ठा की, जिस सम्प्रदाय में शिव, शक्ति, गणपति, सूर्य तथा विष्णु भगवान् इन पाँच देवताओं की मान्यता है। स्मार्त सम्प्रदाय और अद्वैत सम्प्रदाय की रक्षा के लिए उन्होंने सर्वप्रथम विद्याकेन्द्र काशी में

सुमेरुमठ की स्थापना की और उसके पश्चात् चार दिगन्तों में चार मठों की स्थापना की, जो आज भी प्रसिद्धि-प्राप्त हैं। मठों के द्वारा पूरे भारत में धर्मानुशासन किया जाता था। सुमेरुमठ विद्याकेन्द्र काशी में विद्यापीठ के रूप में था। वह कालक्रम से विद्या के ह्रास तथा यवनों द्वारा उत्तर भारत के आक्रान्त होते रहने के कारण ह्रास को प्राप्त होता गया और विद्या संन्यासियों में न रहकर केवल ब्राह्मणों में जीविका के रूप में रह गयी। जैसा कि भर्तृहरि ने कहा है—

> "पुरा विद्वत्ताऽऽसीदुपशमवतां क्लेशहतये,
> गताकालेनासौ विषयसुखसिद्ध्यै विषयिणाम्।
> इदानीं सम्प्रेक्ष्य क्षितितलभुजः शास्त्र-विमुखान्,
> अहो कष्टं साऽपि प्रतिदिनमधोऽधः प्रविशति॥

इस प्रकार कालक्रम से विलुप्तप्राय उस सुमेरुमठ का उद्धार काशी के विद्वानों तथा विश्ववन्द्य, धर्मसम्राट्, यतिचक्रचूडामणि अनन्तश्रीविभूषित स्वामी श्री करपात्री जी महाराज ने किया। इस मठ के शङ्कराचार्य पद पर अनन्त श्री विभूषित पूज्यपाद कवितार्किक चक्रवर्त्ती स्वामी श्रीमहेश्वरानन्दसरस्वतीजी महाराज प्रतिष्ठापित किये गये। उनके ब्रह्मीभूत होने के अनन्तर संवत् २०३१ विक्रम माघ शुक्ल त्रयोदशी को काशी के समस्त मूर्धन्य विद्वानों ने तथा पूज्य स्वामी करपात्री जी महाराज ने काशी हिन्दू विश्वविद्यालयीय संस्कृत कालेज के वेदान्तविभागाध्यक्ष ब्रह्मचारी श्रीशङ्करानन्दजी को संन्यास संस्कार से दीक्षित कर काशी सुमेरुपीठ के शङ्कराचार्य पद पर अभिषिक्त किया, जो वर्तमान में ऊर्ध्वाम्नाय सुमेरुपीठाधीश्वर अनन्त श्री विभूषित स्वामी श्री शङ्करानन्द सरस्वती जी महाराज के नाम से विख्यात हैं। आप नव्यन्याय, वेदान्त, सांख्ययोगादि शास्त्रों के विशिष्ट विद्वान् एवं निवृत्तिमार्गस्थ यतीश्वर हैं।

इस मठ की सुमेरु यह संज्ञा इतर चार मठों के मध्य में अवस्थित होने के कारण हुई। यह सुमेरुमठ काशी तथा कैलास दोनों स्थानों में है। क्योंकि इस मठ के आचार्य ईश्वर - (महेश्वर) अर्थात् शङ्कर जी हैं। यद्यपि मठाम्नायोपनिषद् में ऊर्ध्वाम्नाय सुमेरुमठ का ही वर्णन मिलता है, किन्तु ऊर्ध्वाम्नाय

सुमेरुमठ का काशी सम्प्रदाय है, यह भी वहाँ लिखा है। इससे यह सिद्ध होता है कि दोनों स्थानों के सुमेरुमठों का सम्प्रदाय एक ही है, क्योंकि इन दोनों मठों के आचार्य ईश्वर (शङ्कर) एक ही हैं मठाम्नायोपनिषद् में सुमेरुमठ का वर्णन निम्नलिखित है—''

'ॐ पञ्चमे ऊर्ध्वाम्नायः सुमेरुमठः काशीसम्प्रदायः जनक - याज्ञवल्क्यादि-शुक-वामदेवादि-जीवन्मुक्ता एतत् सनक-सनन्दन-कपिल-नारदादि-ब्रह्मनिष्ठाः नित्यब्रह्मचारी कैलासक्षेत्रं मानससरोवरं तीर्थं निरञ्जनो देवता मायादेवी ईश्वराचार्यः अनन्त-ब्रह्मचारी शुकदेव-वामदेवादिजीवन्मुक्तानां सुसंवेदप्रपठनं परोरजसेसावदों 'संज्ञानमनन्तं ब्रह्म' इत्यादि वाक्यविचारः नित्यानित्य - विवेकेनात्मनोपास्ति आत्मतीर्थे आत्मोद्धारार्थे साक्षात्कारार्थे संन्यासग्रहणं करिष्ये। ॐ नमो नारायणेति।'

ऊर्ध्वाम्नाय सुमेरुमठ के संन्यासियों के लिए, संन्यास लेने के पहले यह संकल्प आवश्यक होता है तथा 'ॐ नमो नारायणाय' इस मन्त्र का जप आवश्यक होता है। काशी खण्ड में काशी का वर्णन पढ़ने तथा काशी को प्रत्यक्ष देखने से यह स्पष्ट हो जाता है कि इस पुण्यक्षेत्र में समस्त तीर्थस्थान तथा सभी देवता हैं। अतः काशी में कैलास, मानसरोवर आदि सब स्थान हैं।

काशी का सुमेरुमठ ऊर्ध्वाम्नाय इसलिए कहा जाता है क्योंकि काशी भगवान् शङ्कर के त्रिशूल पर विराजमान है। यही कारण है कि इस पुण्य क्षेत्र में कोई भी धार्मिक कृत्य करने से पहले संकल्प करते समय 'अविमुक्त-वाराणसीक्षेत्रे त्रिकण्टकविराजिते' यह कहा जाता है। श्री हर्ष ने काशी को स्वर्ग बताया है, अतः काशिक सुमेरुमठ ऊर्ध्वाम्नाय कहा जाता है—

वाराणसी निविशते न वसुन्धरायां
तत्र स्थितिर्मखभुजां भुवने निवासः।
तत्तीर्थमुक्तवपुषामत एव मुक्तिः
स्वर्गात्परं पदमुदेतु मुदे तु कीदृक्॥

—(नै० च०, सर्ग ११, ११६ श्लोक)

पूर्वोक्त मठाम्नायोपनिषद् से उद्धृत संकल्प का निम्नलिखित अर्थ है—

पञ्चम स्थान काशी में मेरा ऊर्ध्वाम्नाय अर्थात् पृथिवी में सर्वोपरि स्थित सुमेरुमठ है। मेरा अन्य चार मठों से भिन्न काशी सम्प्रदाय है। हमारे इस सुमेरु मठ में पूर्व समय में जनक, उनके गुरु याज्ञवल्क्य, शुकदेव, वामदेव आदि जीवन्मुक्त हो गये हैं। इस मठ में सनक, सनन्दन, कपिल, नारद आदि ब्रह्मनिष्ठ हुए। इस मठ में ब्रह्मविद्या का सदा अध्ययन करते हुए नैष्ठिक ब्रह्मचारी रहते हैं। क्योंकि 'मठश्छात्रादिनिलयः' यह मठ शब्द का अर्थ बतलाता है। अतः विद्या प्राप्ति के अनन्तर विद्वान् संन्यासी भी मठ में रहते हैं। इस सुमेरुमठ का काशी में कैलास नामक प्रसिद्ध स्थान है अर्थात् ज्ञानार्जन का क्षेत्र है। काशी का मानससरोवर बाह्यतीर्थ तथा ध्यान काल में आभ्यन्तर मानस सरोवर तीर्थ है। इस मठ के उपास्य देव निरञ्जन निष्कल्मष (अविद्या सम्पर्करहित ब्रह्म) हैं तथा उनकी शक्ति माया देवी हैं। इस मठ के नैष्ठिक ब्रह्मचारियों के उपदेष्टा आचार्य ईश्वर अर्थात् सदाशिव विश्वनाथ हैं। इस मठ में पढ़नेवाले नैष्ठिक ब्रह्मचारियों की संख्या अनन्त है। इस मठ में शुकदेव, वामदेव आदि जीवन्मुक्तों का सर्वजन संवेद्य (जिसे सब लोग जानते हैं) प्रपठन (प्रकृष्टपठन) अर्थात् स्वाध्याय हुआ। यह मठ तथा इसके उपास्यदेव ब्रह्म रजोगुण से परे हैं। इस मठ में 'संज्ञानमनन्तं ब्रह्म' इस महावाक्य का विचार किया जाता है। इस वाक्य का अर्थ है कि ब्रह्म अनन्त - दिग्देश काल वस्तु कृत परिच्छेद से रहित है। ब्रह्म की माप दिशा, काल या किसी वस्तु से नहीं की जा सकती। तथा सम्यग् ज्ञान स्वरूप है। इस मठ में नित्याऽनित्य विवेक पूर्वक आत्मस्वरूप की उपासना की जाती है। इस मठ में आत्मा आभ्यन्तर तीर्थ है, इस मठ में निवास का फल आत्मोद्धार तथा आत्म साक्षात्कार है। ऐसे मठ में हम संन्यास ग्रहण करेंगे।

इस संकल्प वाक्य के अध्ययन से यह सुविदित हो जाता है कि काशी का सुमेरुमठ सर्वोच्च मठ है। इस मठ की प्रतिष्ठा काशी नगरी के साथ ही अनादि काल से है। इस मठ के प्रतिष्ठापक आचार्य साक्षात् भगवान् शङ्कर हैं। अतः स्पष्टतया, बिना किसी संशय के यह कहा जा सकता है कि विद्या केन्द्र काशी में स्थित इस मठ का आद्य शङ्कराचार्य ने पुनः प्रतिष्ठा तथा उद्धार किया। आज

भी देश की श्रद्धालु जनता जन्म-मरण परम्परा की निवृत्ति के लिए काशीवास करती है। और इसीलिए शास्त्रों में 'मरणं मङ्गलं यत्र, कृतकृत्याःप्रतीक्षन्ते मृत्युं प्रियमिवातिथिम्, इह हि जन्तोः प्राणेषु उत्क्रममाणेषु रुद्रस्तारकं ब्रह्मोपदिशति' इत्यादि लिखा है।

श्री मठाम्नाय सेतु में भी काशी के सुमेरुमठ का निम्नलिखित वर्णन मिलता है—

पञ्चमस्तूर्ध्व आम्नायः सुमेरुमठ उच्यते।
सम्प्रदायोऽस्य काशी स्यात् सत्यज्ञानभिदे पदे॥
कैलासः क्षेत्रमित्युक्तं देवताऽस्य निरञ्जनः।
देवी माया तथाचार्य ईश्वरोऽस्य प्रकीर्तितः॥
तीर्थन्तु मानसं प्रोक्तं ब्रह्मतत्त्वावगाहितम्।
तत्र संयोगमार्गेण संन्यासं समुपाश्रयेत्।
सूक्ष्मवेदस्य वक्ता च तत्र धर्मं समाचरेत्॥

यह श्रीमठाम्नायसेतु, मठाम्नायोपनिषद् के समान ही काशिक सुमेरुमठ की सिद्धि तथा स्थिति में प्रमाण है। इस प्रकार यह काशी का सुमेरुमठ काशी के विद्वत्समाज के मान्य होने से सर्वमान्य है। मठाम्नायोपनिषत् में निर्दिष्ट नियमों के अनुसार आज भी इसके प्रवर्तक आचार्य श्रीविश्वनाथ मरने के समय अध्यात्मविद्या का उपदेश करते हैं और उनके प्रतिनिधि वर्तमान शङ्कराचार्य अनन्त श्री विभूषित जगद्गुरु पूज्यपाद श्री शङ्करानन्द सरस्वती जी महाराज भी ब्रह्मविद्या का उपदेश करते हैं। इस पीठ का संरक्षण तथा संवर्धन आस्तिक जनता का कर्तव्य है।

—पं० रघुनाथ पाण्डेय, छाता, बलिया
भू० पू० विभागाध्यक्ष, संस्कृत वि० वि०
वाराणसी

मठाम्नायोपनिषत्

ॐ ऊर्ध्वाम्नाय-गुरूपदेशभुवनाकार-सिंहासनसिद्धाचारवन्दितं समस्त-वेद-वेदान्त-सारनिर्माणं परात्परं निरञ्जन-ज्ञानार्थ-षट्चक्र-जाग्रतीमयं परावाचा परात्परं सर्वसाक्षिधृतं चिन्मयं ज्योतिर्लिङ्गं निराकारं गलितं पूर्णप्रभाशोभितं शान्तं चन्द्रोदयनिभं भजमनस्तच्छ्रीगुरुचैतन्यं प्रणमामि ।

ऊर्ध्वाम्नायस्थ गुरु के उपदेश से भुवन के आकारवाले सिंहासन पर सिद्ध आचारवालों से वन्दित, समस्त वेद और वेदान्त के सार के निर्माता, परात्पर-निरञ्जन उसके ज्ञान के लिए षट्चक्र को जाग्रत् करनेवाले परा वाक् से जो पर, उससे भी पर, जो समस्त साक्षियों से धृत है, चिन्मय है, ज्योतिर्लिङ्ग है, निराकार है, द्रवित है, पूर्ण प्रभा से शोभित है, चन्द्रोदय के समान शान्त है, उन चैतन्यरूपी गुरु को प्रणाम करता हूँ। हे मन, तू उसे प्राप्त कर ले ।

अखण्डमण्डलाकारं व्याप्तं येन चराचरम् ।
तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥

जो पद अखण्ड मण्डल के आकार में है, जो चर तथा अचर (स्थावर और जंगम) में व्याप्त है, उस पद (स्थान) को जिसने दिखाया है, उन श्री गुरु जी महाराज को मेरा प्रणाम है ।

ॐ प्रथमे पश्चिमाम्नायः शारदामठः कीटवारिसम्प्रदायः तीर्थाश्रमपदं द्वारिकाक्षेत्रं सिद्धेश्वरो देवः भद्रकाली देवी ब्रह्मस्वरूपाचार्यः गंगागोमतीतीर्थं-स्वरूपब्रह्मचारी सामवेदप्रपठनं 'तत्त्वमसि' इत्यादिवाक्यविचारः नित्या-नित्य-विवेकेनात्मनोपारिव आत्मतीर्थे आत्मोद्धारार्थे साक्षात्कारार्थे संन्यासग्रहणं करिष्ये । ॐ नमो नारायणायेति ।

प्रथम पश्चिमाम्नाय शारदामठ, सम्प्रदाय कीटवारि तीर्थ और आश्रम, पद, द्वारिका क्षेत्र, देवता सिद्धेश्वर, देवी भद्रकाली, आचार्य ब्रह्मस्वरूप, तीर्थ—गंगा

गोमती, ब्रह्मचारी के नाम के आगे स्वरूप सामवेदाध्ययन, 'तत्त्वमसि' महा वाक्य विचार नित्यानित्य विवेक द्वारा आत्मा की उपासना करना, आत्मतीर्थ में आत्मा के उद्धार के लिए तथा आत्मा के साक्षात्कार के लिए, संन्यास ग्रहण करूँगा, यह संकल्प वाक्य है। 'ॐ नमो नारायणाय' यह समाप्ति सूचक वाक्य है।

ॐ द्वितीये पूर्वाम्नायः गोवर्द्धनमठः भोगवारिसंप्रदायः वनारण्ये पुरुषोत्तमं क्षेत्रं जगन्नाथः विमलादेवी भद्रपद्मपादाचार्यः महोदधितीर्थं प्रकाशब्रह्मचारी ऋग्वेदप्रपठनम् तमेवैक्यं जानथ 'प्रज्ञानमानन्दं ब्रह्म' इत्यादिवाक्यविचारः नित्याऽनित्यविवेकेनात्मनोपास्ति आत्मतीर्थे आत्मोद्धारार्थे साक्षात्कारार्थे संन्यास-ग्रहणं करिष्ये। ॐ नमो नारायणायेति।

द्वितीय पूर्वाम्नाय गोवर्धन मठ, भोगवारि, सम्प्रदाय वन तथा अरण्य पद, पुरुषोत्तम क्षेत्र, जगन्नाथ देवता, विमला देवी, आचार्य भद्रपद्मपाद, तीर्थ महोदधि (यह दक्षिण समुद्र की संज्ञा है) ब्रह्मचारी के नाम के आगे प्रकाश, ऋग्वेदाध्ययन आत्मैक्य ज्ञान के लिये प्रज्ञान आनन्द ब्रह्म इत्यादि महावाक्यों का विचार, नित्य और अनित्य के विवेक द्वारा आत्मा की उपासना करना, आत्म-तीर्थ में आत्मा के उद्धार के लिये संन्यास ग्रहण करूँगा। यह संकल्प लें। 'ॐ नमो नारायणाय' यह समाप्ति सूचक वाक्य है।

ॐ तृतीये उत्तराम्नायः ज्योतिर्मठः आनन्दवारिसम्प्रदायः गिरिपर्वत-सागरपदानि बदरिकाश्रमक्षेत्रं नारायणो देवता पूर्णगिरीदेवी त्रोटकाचार्यः अलकनन्दातीर्थं आनन्दब्रह्मचारी अथर्वणवेदपठनं तमेवैक्यं जानथ 'अयमात्मा ब्रह्म' इत्यादिवाक्यविचारः नित्यानित्यविवेकेनात्मनोपास्ति आत्मतीर्थे आत्मो-द्धारार्थे साक्षात्कारार्थे संन्यासग्रहणं करिष्ये। ॐ नमो नारायणायेति।

तृतीय उत्तराम्नाय ज्योतिर्मठ, आनन्दवारि सम्प्रदाय, गिरिपर्वत और सागर पद, बदरिकाश्रम क्षेत्र, नारायण देवता, पूर्णागिरि देवी, आचार्य त्रोटक, तीर्थ अलकनन्दा (हिमालय में गंगा की एक धारा का नाम) ब्रह्मचारी के नाम के अन्त में आनन्द, अथर्ववेदाध्ययन उसी एकता के ज्ञानार्थ 'अयमात्मा ब्रह्म' इस महावाक्य का विचार नित्य और अनित्य के विवेक द्वारा आत्मा की उपासना करना, आत्मा के लिये, आत्मा के उद्धार के लिये तथा आत्मसाक्षात्कार के लिये

संन्यास ग्रहण करूँगा, यह संकल्प लें। 'ॐ नमो नारायणाय' यह समाप्ति सूचक वाक्य है।

ॐ चतुर्थे दक्षिणाम्नायः शृंगेरीमठः भूरिवारि सम्प्रदायः सरस्वतीभारती-पुरी चेति पदानि रामेश्वरक्षेत्रं आदिवराहो देवता कामाक्षी देवी शृंगी ऋषिः पृथ्वीधराचार्यः तुङ्गभद्रातीर्थं चैतन्यब्रह्मचारी यजुर्वेदप्रपठनं तमेवैक्यं जानथ 'अहं ब्रह्माऽस्मि' इत्यादि-वाक्य-विचारः नित्यानित्यविवेकेनात्मनोपास्ति आत्मतीर्थे आत्मोद्धारार्थे साक्षात्कारार्थे संन्यासग्रहणं करिष्ये। ॐ नमो नारायणाय इति।

चतुर्थ दक्षिणाम्नाय शृंगेरी मठ, भूरिवारि सम्प्रदाय, सरस्वती भारती पुरी ये तीन पद, रामेश्वर क्षेत्र, आदिवराह देवता, कामाक्षी देवी, शृंगी ऋषि, पृथ्वीधर आचार्य, तुंगभद्रा तीर्थ, चैतन्य ब्रह्मचारी, यजुर्वेदाध्ययन, आत्मा की एकता का ज्ञान प्राप्त करना, 'अहं ब्रह्मास्मि' इस महावाक्य का विचार, नित्य और अनित्य वस्तु के विवेक द्वारा आत्मा की उपासना करना, आत्म तीर्थ में आत्मा के उद्धार के लिये तथा आत्मा के साक्षात्कार के लिये संन्यास ग्रहण करूँगा। यह संकल्प वाक्य है। 'ॐ नमो नारायणाय' यह समाप्ति सूचक वाक्य है।

ॐ पञ्चमे ऊर्ध्वाम्नायः सुमेरुमठः काशीसम्प्रदायः जनक-याज्ञवल्क्या-दि-शुक-वामदेवादि जीवन्मुक्ताः एतत्सनक-सनन्दन-कपिल-नारदादि ब्रह्मनिष्ठाः नित्यब्रह्मचारी कैलासक्षेत्रं मानससरोवरं तीर्थं निरञ्जनो देवता मायादेवी ईश्वराचार्यः अनन्तब्रह्मचारी शुकदेववामदेवादि जीवन्मुक्तानां सुसंवेदप्रपठनं परोरजसेऽसावदों 'संज्ञानमनन्तं ब्रह्म' इत्यादि वाक्यविचारः नित्यानित्य-विवेकेनात्मनोपास्ति आत्मतीर्थे आत्मोद्धारार्थे साक्षात्कारार्थे संन्यासग्रहणं करिष्ये। ॐ नमो नारायणायेति।

पंचम ऊर्ध्वाम्नाय सुमेरुमठ काशी सम्प्रदाय जनक याज्ञवल्क्य, शुकदेव, वामदेव आदि जीवन्मुक्त, सनक, सनन्दन, कपिल, नारद आदि ब्रह्म निष्ठ नित्य ब्रह्मचारी अर्थात् बालब्रह्मचारी कैलास क्षेत्र, मान सरोवर तीर्थ, निरंजन देवता, मायादेवी, ईश्वर आचार्य, अनन्त ब्रह्मचारी, शुकदेव, वामदेव आदि जीवन्मुक्तों के सुन्दर

अनुभवों का अध्ययन 'परोरजसे सावदों संज्ञानमनन्तं ब्रह्म' इत्यादि वाक्यविचार, नित्य और अनित्य वस्तु के विवेक द्वारा आत्मा की उपासना करना, आत्म तीर्थ में आत्म के उद्धार के लिये तथा साक्षात्कार के लिये संन्यास ग्रहण करूँगा। यह संकल्प वाक्य है। 'ॐ नमो नारायणाय' यह समाप्ति सूचक वाक्य है।

ॐ षष्ठे आत्माम्नायः परमात्मामठः सत्यसुसंप्रदायः नाभिकुण्डलिक्षेत्रं त्रिकुटीतीर्थं हंसो देवी परमहंसो देवता अजपा सोऽहं महामन्त्रः ब्रह्मविष्णु-महेश्वराद्याः जीव ब्रह्मचारी हंसविद उपासितः, उपाधिभेदसंन्यासार्थं ज्ञान-संन्यासग्रहणं करिष्ये। ॐ नमो नारायणायेति।

षष्ठ आत्मा आम्नाय परमात्मा मठ, सत्यसु सम्प्रदाय नाभिकुण्डली क्षेत्र, त्रिकुटीतीर्थ, हंसो देवी, परमहंस देवता, अजपा सोऽहं महामन्त्र, ब्रह्मविष्णु महेश्वर आदि [ब्रह्मनिष्ठ] जीवब्रह्मचारी, हंसविद की उपासना, उपाधि भेद के संन्यास के लिये ज्ञान संन्यास का ग्रहण करूँगा। यह संकल्प वाक्य है। 'ॐ नमो नारायणाय' यह समाप्ति सूचक वाक्य है।

ॐ सप्तमे जम्बूद्वीपः सम्यग्ज्ञानं शिखा न सूत्रं वेद्यवेदकः श्रद्धानदी विमलातीर्थं आत्मलिंगशान्त्यर्थे विचारः नित्यानित्यविवेकानात्मनोपासित आत्मतीर्थे आत्मोद्धारार्थे साक्षात्कारार्थे संन्यासग्रहणं करिष्ये। ॐ नमो-नारायणायेति।

सप्तम जम्बू द्वीप है, सम्यक् ज्ञान, शिखा है (न) यह सूत्र है, जो वेद्यका वेदक है, श्रद्धानदी, विमलातीर्थ, आत्मलिंग की शान्ति का विचार, नित्य और अनित्य वस्तु के विवेक द्वारा आत्मा की उपासना करना, आत्मतीर्थ में आत्मा के उद्धार के लिये तथा साक्षात्कार के लिए संन्यास ग्रहण करूँगा। यह संकल्प वाक्य है। 'ॐ नमो नारायणाय' यह समाप्ति सूचक वाक्य है।

मठाम्नाय-विमर्श

भगवत्पूज्यपाद आद्यशङ्कराचार्य द्वारा संस्थापित मठों के विषय में विभिन्न लोग विभिन्न प्रकार की युक्तियों को उपस्थापित करते हुए स्वाभिमत मठ को ही आचार्य-प्रस्थापित बतलाया करते हैं। आचार्य शङ्कर के प्रादुर्भावकालनिर्णय के विषय में भी उक्त पद्धति के आधार पर स्वाभिमत काल को ही प्रदर्शित करते हैं। परिणामस्वरूप ईशा से लगभग ५०० वर्ष पूर्व से ८ वीं शताब्दी तक का काल विभिन्न ढंग से आचार्य प्रादुर्भावकाल से सम्बद्ध विभिन्न स्थलों में पढ़ने को मिलता है। इसी प्रकार की पद्धति मठाम्नायों के विषय में दृष्टिगोचर होती है। अतः इदमित्थमेव रूप से कहना कठिन ही है। इन्हीं सब कारणों से काशीस्थ ऊर्ध्वाम्नाय सुमेरु मठ के निर्णय में भी कठिनाइयाँ उपस्थित होती हैं। व्यर्थ विवाद में पड़ कर समय एवं शक्ति का अपव्यय करना अनभीष्ट होने के कारण आद्यशङ्कराचार्यप्रणीत मठाम्नायोपनिषद् एवं मठाम्नाय सेतु के आधार पर शाङ्कर आम्नायमठों का संक्षिप्त परिचय यहाँ पर हम उपस्थित कर रहे हैं। मठाम्नायोपनिषद् में सात आम्नायों का निरूपण है। ये हैं—पश्चिमाम्नाय, पूर्वाम्नाय, उत्तराम्नाय, दक्षिणाम्नाय, ऊर्ध्वाम्नाय, आत्माम्नाय तथा निष्कलाम्नाय।

कतिपय लोगों का कथन है—आम्नाय मठ केवल चार हैं। यह उक्ति आचार्य शङ्कर द्वारा रचित मठाम्नायोपनिषत् एवं सेतु के विरुद्ध है। शृङ्गेरी-मठीय 'श्रीमज्जगद्गुरुशाङ्करमठविमर्श' नामक पुस्तक के ३०५ पृष्ठ में लिखा है—"आचार्य शङ्कर द्वारा रचित आम्नाय स्तोत्र या सेतु में सात आम्नाय का ही उल्लेख है और ऊर्ध्वाम्नाय ज्ञानगोचर होने से काञ्ची का दृष्टिगोचर आम्नाय शास्त्र सम्मत नहीं है। ऊर्ध्वाम्नाय भी काञ्ची मठ का नहीं हो सकता है चूँकि काशी जो भू कैलाश माना गया है और जो 'त्रिकण्टक विराजते' है और कुछ विद्वान् एवं मान्य पुस्तकें ऊर्ध्व का लक्षणार्थ से काशी का सुमेरु मठ को ऊर्ध्व मानते हैं।"...यदि मान भी लें कि ऊर्ध्वाम्नाय का लक्षणार्थ से दृष्टिगोचर

मठ बना लिया गया हो तो भी काशी का सुमेरु मठ ही ऊर्ध्व बन सकता है न कि दक्षिणाम्नाय काञ्ची।"

मठाम्नायोपनिषत् एवं मठाम्नाय सेतु के अनुसार आम्नाय मठ सात हैं यह बात निर्विवाद सिद्ध है। अतएव यतिचक्रचूड़ामणि अनन्त श्रीविभूषित धर्मसम्राट् स्वामी श्रीकरपात्री जी महाराज ने बतलाया है कि "सुमेरु पीठ शास्त्रीय है तथा मठाम्नाय उपनिषद् द्वारा अनुमोदित है" (सन्मार्ग २० अगस्त १९८०);

कुछ लोगों का कथन है कि ऊर्ध्वाम्नाय ज्ञानगोचर ही है, दृष्टिगोचर नहीं है जैसा कि "श्रीमज्जगद्गुरुशाङ्कर मठविमर्श" के ३०३ पृष्ठ में लिखा है, "अर्थात् तीन आम्नाय ऊर्ध्व, आत्मा, निष्कल तीनों ज्ञानगोचर हैं और बाकी चार आम्नाय दृष्टिगोचर चार दिशायें हैं। मठाम्नायानुसार दृष्टिगोचर दिशा चार ही का वर्णन है और तीन ज्ञानगोचर हैं।"

यहाँ पर यह उल्लेखनीय है कि आद्यशङ्कराचार्यविरचित मठाम्नायोपनिषत् एवं सेतु में ज्ञानगोचर या दृष्टिगोचर शब्द का उल्लेख नहीं है। अतः ज्ञान-गोचरादि की कल्पना अप्रामाणिक है। उपर्युक्त पुस्तक में एक श्लोक पाठान्तर रूप से मिलता है—

"अथोर्ध्वशेष-आम्नायास्ते विज्ञानैकविग्रहाः।
अथोदूर्ध्वशेषगौणा ये तेऽपि ज्ञानेन सिद्धिदाः॥"

उपर्युक्त कल्पना का आधार यही श्लोक है। इस श्लोक की गणना मठाम्नायसेतुस्थ श्लोकों में नहीं है, अतः अवश्य ही यह आधुनिक एवं प्रक्षिप्त है। अब हम तथाकथित कल्पित दृष्टिगोचर या ज्ञानगोचर पर संक्षिप्त विचार उपस्थित करते हैं—दृष्टिगोचर शब्द का अर्थ—चक्षुरिन्द्रियजन्यविषय अथवा सामान्यतः इन्द्रियजन्यज्ञानविषय या चक्षुरिन्द्रियगोचर है। प्रथम तृतीयविकल्पपक्षमें वाराणसेयसुमेरुमठ भी दृष्टिगोचर है। तृतीयविकल्पमें पुनः प्रश्न होता है—यत्किञ्चिच्चक्षुरिन्द्रियगोचर या यावच्चक्षुरिन्द्रियगोचर। प्रथमपक्ष गोवर्द्धनादिमठाद्यन्तर्भाविणाव्यासिदोषग्रस्त है। द्वितीयपक्ष असम्भवदोषग्रस्त होने से त्याज्य है।

ज्ञानगोचरमठ की तथाकथित कल्पना सर्वथा अयौक्तिक है। पाठक विचार करें, यदि तीन मठ ज्ञानगोचर हैं, तो अन्य चार मठ अज्ञानगोचर हैं। यह बात

अर्थतः सिद्ध हो जाती है। अतः अन्य चार मठ अज्ञानगोचर होने के कारण अप्रमाण एवं अग्राह्य हो जायेंगे। अपि च ज्ञानगोचर शब्द का क्या अर्थ है, यत्किञ्चित्—ज्ञानगोचर अथवा यावज्ज्ञानगोचर, प्रथम पक्ष ठीक नहीं। कारण यत्किञ्चिज्ज्ञान का विषय होने के कारण शृंगेरी आदि मठ भी ज्ञानगोचर ही हैं। द्वितीय पक्ष असम्भव दोषग्रस्त होने से पराहत है। और ज्ञान शब्द से आत्मज्ञान या तद्व्यतिरिक्त ज्ञान विवक्षित है। इसमें प्रथम पक्ष असंगत है। कारण सुमेरु मठ काशी सम्प्रदाय आदि आत्मज्ञानाविषय होने के कारण ज्ञान-गोचर नहीं हो सकते। द्वितीय पक्ष द्वारिकादि मठान्तर्भाविणातिव्याप्त होने से सर्वथा अग्राह्य है।

मठों के विषय में ज्ञानगोचरादि की युक्ति तथा प्रमाणविरहित कल्पना भी शास्त्रज्ञ विद्वान् की नहीं कही जा सकती, कारण मठ वह हैं जहाँ पर छात्रादि अध्ययन करते हुए निवास करते हैं—'मठश्छात्रादिनिलयः' (अमरकोष २-२-८) तथाकथित ज्ञानगोचर मठ दृष्टिगोचरताशून्यस्थान क्या मठशब्दवाच्य हो सकता है। मठ शब्द 'मठ मदनिवासयोः' धातु से 'हलश्च' सूत्र से घञ् प्रत्ययान्त है, संज्ञापूर्वकत्वात् वृद्धि नहीं होती अतः 'मठन्ति निवसन्ति छात्राः संन्यासिनश्चात्रेति मठः।' अतः मठों के विषय में ज्ञानगोचरादि की तथाकथित कल्पना सर्वथा युक्ति एवं मठाम्नायोपनिषद् से बहिर्भूत होने के कारण अप्रामाण्यज्ञानास्कन्दित तथा अग्राह्य है।

पाठकगण विचार करें—यदि चार आम्नाय मठों की ही स्थापना शङ्करावतार आचार्य शङ्कर द्वारा हुई थी ऐसा माना जाय तो धर्मराज्यशासन क्षेत्रों में अव्यावहारिकता का दोष स्पष्ट रूप से प्रतिभासित न होता। यह बात सुविदित तथा सुनिश्चित है कि भारतवर्ष में धार्मिक एवं सांस्कृतिक धारा की एकसूत्रता तथा अविच्छिन्नता आचार्य शङ्कर को सर्वथा अभीष्ट थी अतएव भारत के सुदूर स्थानों में मठ स्थापन कार्य उन्होंने सम्पादित किया।

राजनीतिक दृष्टि से भारत की राजधानी दिल्ली (Delhi) अतीत में थी, वर्तमान में है, भविष्य में भी हो सकेगी, परन्तु धार्मिक एवं सांस्कृतिक दृष्टि से भारत की राजधानी वाराणसी या काशी ही थी, है, और यावच्चन्द्रदिवाकर

रहेगी। अतः वाराणसी में भी आचार्य शङ्कर ने मठ की स्थापना की थी। उस मठ का नाम सुमेरु है।

मठाम्नाय से सम्बद्ध ग्रन्थों के अध्ययन करने पर स्पष्ट ज्ञात होता है कि—काशीस्थ ऊर्ध्वाम्नाय सुमेरु मठ निश्चित रूप से आद्यशङ्कराचार्य द्वारा संस्थापित था। Shri Sankara and Sankarite Institutions (शंकराचार्य और उनकी संस्थाएँ) नामक पुस्तक में श्री रामेश्वरानन्द तीर्थ दण्डिस्वामी, ओंकार-मठ वाराणसी, स्वामी दत्तात्रेयानन्द सरस्वती, गुरुदत्तात्रेय मठ वाराणसी, श्री शिवनाथ पुरी जी महन्त अन्नपूर्णा मन्दिर वाराणसी, श्री महावीरप्रसाद जी अध्यक्ष काशी विश्वनाथ मन्दिर वाराणसी, महामहोपाध्याय पं. प्रमथनाथ तर्कभूषण, महामहोपाध्याय पण्डित अनन्दाचरण तर्कचूड़ामणि, महामहोपाध्याय पण्डित वामाचरण न्यायाचार्य आदि ख्यातिलब्ध २४ विद्वानों एवं सुप्रतिष्ठित व्यक्तियों ने काशीस्थ सुमेरु मठ को आद्यशङ्कराचार्य द्वारा संस्थापित स्वीकार करते हुए लिखा है—"During his stay at the holi city of Kashi Paramahans Parivrajakcharya Jagadguru the Ādya Śankarāchārya maharaj established the sumere Matha" आद्य शङ्कराचार्य महाराज जी ने वाराणसी के अपने प्रवास काल में सुमेरु मठ की स्थापना की थी।

यहाँ पर एक बात विशेष ध्यान देने योग्य है—'श्रीमज्जगद्गुरु शाङ्कर मठ विमर्श' ग्रन्थ में शासनाधीन धर्मराज्य सीमा शीर्षक तालिका के अन्तर्गत गोवर्द्धन मठ के अधीन—अङ्ग, बङ्ग, कलिङ्ग, उत्कल प्रदेश हैं। शृङ्गेरी शारदामठ के अधीन—आन्ध्र, द्रविड, केरल, कर्णाटक प्रदेश, द्वारका शारदामठ के अन्तर्गत—सिन्धु, सौवीर, महाराष्ट्र, सौराष्ट्र, ज्योतिर्मठ के अन्तर्गत—कुरु, काश्मीर, पाञ्चाल, कम्बोज प्रदेश हैं। भारत का शेष भाग—यथा आर्यावर्त का उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, राजस्थान, बिहार का विस्तृत भाग किस मठ के धर्म-राज्यशासनाधीन हैं? इसका कोई उल्लेख नहीं मिलता है। क्या वे प्रदेश अनार्यों के लिए सुरक्षित कर दिये गये थे? हम पूर्व में संकेत कर चुके हैं कि धार्मिक दृष्टि से भारत की राजधानी काशी है। धर्म की राजधानी में आचार्य

शङ्कर ने कोई व्यवस्था नहीं की, यह कल्पना कैसे उठ सकती है ? अतः आचार्य शङ्कर ने यहाँ पर भी ऊर्ध्वाम्नाय सुमेरु मठ की स्थापना की और तत्तन्मठाधीन प्रदेशों के अतिरिक्त भूभाग पर केन्द्रीय मठ सुमेरु का धर्म-शासन था।

तात्पर्य यह कि, 'सुमेरु मठ का काशीस्थ होने के कारण प्रभाव विस्तार समस्त भारत में था तथा अवशिष्ट भाग में तो था ही। आन्तरिक स्वातन्त्र्य वर्तमान में भारत में प्रत्येक प्रदेश में है। केन्द्र (दिल्ली) कोई हस्तक्षेप नहीं करता परन्तु केन्द्र का विरोध कर कोई भी प्रदेश सर्वथा स्वतन्त्र नहीं हो सकता। ठीक यही स्थिति शासनाधीनधर्मराज्यसीमा के विषय में समझनी चाहिए। अतः काशी एवं काशीस्थ सुमेरु मठ का स्थान सुमेरु तुल्य है। जो लोग इस मठ का विरोध करते हैं वे अपने अज्ञान तथा हठवादितामात्र का परिचय देते हैं।

वर्तमान में मठानुशासन भी सुव्यवस्थित नहीं है। उदाहरणार्थ गोवर्द्धन मठ के आचार्य पद पर वन या अरण्य नामा संन्यासी का, शारदा मठ में आश्रम या तीर्थ नामा, ज्योतिर्मठ में पर्वत नामा, शृंगेरीमठ में भारतीय नामा संन्यासी का अभिषेक होना चाहिए—जैसा कि मठाम्नाय सेतु में वर्णित है—

शारदामठ आचार्य आश्रमाख्यो बहूत्तमः।
गोवर्धनस्य विज्ञेयोऽरण्यनामा विचक्षणः ॥३६॥
ज्योतिर्मठस्य सततं पर्वताख्यो निगद्यते।
शृङ्गेरमठे नित्यं भारती बहुभावनः ॥३७॥

इस व्यवस्था के परिवर्तन का निषेध वचन भी वहीं पर उल्लिखित है, यथा—'नात्र व्यत्यय आदेयः कदाचिदपि शीलिना (३८)' अर्थात् आचार्यपद पर मठाम्नायसेतु या मठानुशासन के आधार पर आश्रम आदि का होना श्रेयस्कर है।

कुछ पण्डितंमन्य लोग कहते हैं : चार वर्ण, चार आश्रम हैं अतः चार मठ हैं आदि। यह सब कथन अन्धविश्वासमूलक एवं युक्ति शून्य है। यदि चार की संख्या में दुराग्रह करेंगे तो दश नामों का लोप हो जायेगा, वेदान्त सिद्धान्त सम्मत षट् प्रमाणों का, ज्ञान की सप्तभूमिकाओं का, भक्ति की एकादश भूमिकाओं

का, पञ्चद्रविड़ एवं पंचगौड का क्या स्थान होगा ? । अतः मठाम्नायोपनिषत् एवं मठाम्नायसेतु में वर्णित सात आम्नायमठ शास्त्र एवं युक्तिसम्मत हैं । इन्हीं सब कारणों से विश्ववन्द्य अनन्तश्रीविभूषित यतिचक्रचूडामणि धर्मसम्राट् पूज्यपाद स्वामी करपात्री जी महाराज का कथन 'सुमेरु पीठ शास्त्रीय है, मठाम्नायोपनिषद् द्वारा अनुमोदित है (सन्मार्ग २०, अगस्त १९८०) सर्वथा शास्त्र एवं युक्ति-सम्मत है ।'

सारांश यह कि, काशीस्थ ऊर्ध्वाम्नाय सुमेरुमठ का आचार्य शास्त्रीय प्रधान-पीठस्थ होने के कारण सर्वथा हम लोगों को मान्य है । जनता को चाहिए कि उक्त मठ की उन्नति एवं धर्म प्रचार में वर्तमान में काशीस्थ उक्त पीठ पर अभिषिक्त विद्वन्मूर्धन्य जगद्गुरु शङ्कराचार्य अनन्तश्रीविभूषित स्वामी श्री-शङ्करानन्द सरस्वती जी महाराज को सहयोग देवें जिससे वर्तमान की कठिन परिस्थिति में सनातनधर्म के रक्षण में उन्हें बल मिले ।

—स्वामी ऋद्धेश्वरानन्द तीर्थ
महामन्त्री
अखिल भारतीय दण्डी संन्यासी संस्थान
वाराणसी—५
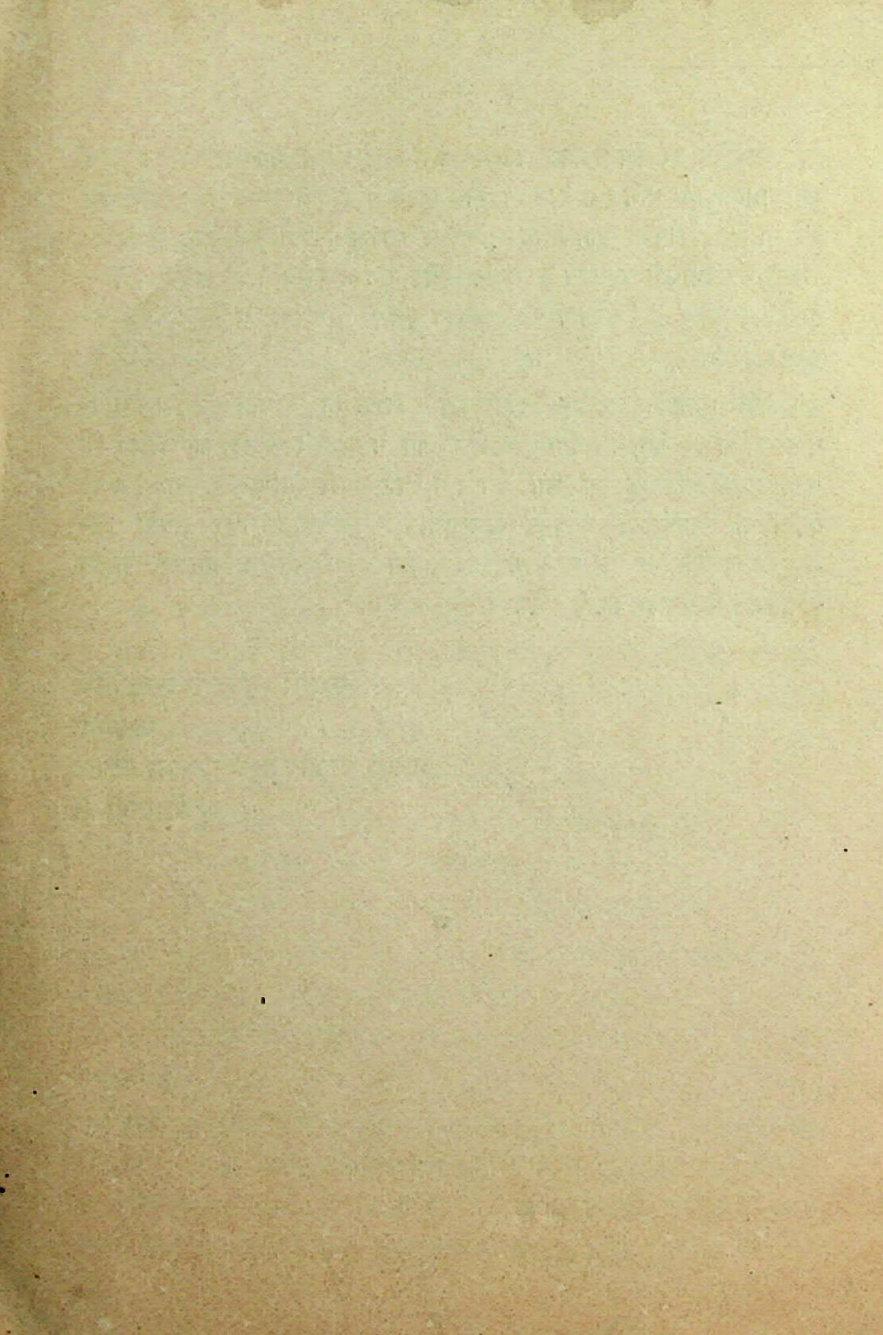
शङ्कराचार्य-प्रशस्ति

श्रीशङ्कराचार्य-जगद्‌गुरूणां
काशीस्थ-सिंहासन-शोभितानाम् ।
दण्डीश्वराणां वरकीर्तिभाजां
पादाम्बुजं पूज्यवरं नमामि ॥

सानन्दमानन्दवने वसन्त-
मानन्दकन्दं हतपापवृन्दम् ।
वाराणसीनाथमनाथनाथं
श्रीविश्वनाथं शरणं प्रपद्ये ॥

•